समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ दिसम्बर २०१३ ● वर्ष : १७ ● अंक : ०६ (निरंतर अंक : १९८)

मासिक समाचार पत्र

सन् २००४ में श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी की गिरफ्तारी के विरोध में उपवास, धरना आंदोलन का नेतृत्व करते समय बापूजी ने कहा था कि 'निर्दोष शंकराचार्यजी को फँसाया जा रहा है, अंत में सत्य की विजय होगी ।' और विजय हुई, शंकराचार्यजी निर्दोष साबित हुए।

ऐसे ही आज विशाल संत-समाज, विभिन्न धार्मिक-सामाजिक संगठन एवं करोड़ों लोग पूज्य बापूजी की निर्दोषता और सच्चाई का समर्थन कर रहे हैं और इस सत्य की भी विजय अवश्य होकर रहेगी।

ऐसा क्यों ?

जब गुजरात उच्च न्यायालय ने गैर-जमानती वॉरंट रद्द करते हुए कहा : नारायण साँईं को भगौड़ा कहना गलत है →	तो क्यों न्यायालय के निर्णय से पहले ही उन्हें पेशेवर फरार अपराधी की तरह पेश कर लोगों को गुमराह किया गया ?
जब नारायण साँईंजी ने स्वयं मीडिया के सामने कहा कि 'लड़की के साथ रेप नहीं हुआ है ।' तथा उनके वकील ने भी पुलिस की बात का पूर्णतया खंडन किया →	तो फिर क्यों झूठा, मनगढ़ंत दुष्प्रचार किया जा रहा है कि 'नारायण साँईं ने आरोप स्वीकार कर लिया है' ?
यदि सूरत की सगी बहनों द्वारा लगाया गया बलात्कार का घृणित आरोप सत्य होता →	तो फिर क्यों वे आश्रम छोड़ने के बाद भी सत्संग में आती रहतीं ? और तो और, २०१३ में भी छोटी बहन साँईंजी के दर्शन करने आयी थी, जिसके फोटो व विडियो भी हैं ।
सूरत की बड़ी बहन कहती है कि '२००१ में उसके साथ बलात्कार होने के बाद उसे आश्रम से भागने का अवसर नहीं मिला ।' →	यह कैसे सम्भव है क्योंकि वह स्वयं यह भी कहती है कि २००१ से २००७ के बीच वह प्रवचन करने हेतु विभिन्न राज्यों के कई शहरों में जाती रहती थी । यहाँ तक कि अपने पिता के घर भी कई बार गयी ।

क्या अब भी इस साजिश की पोल खुलने में कुछ बाकी है ?

पिछले चार महीनों से हो रहे दुष्प्रचार के बावजूद निर्दोष बापूजी के समर्थन में उतरे करोड़ों लोगों द्वारा देशभर में सतत हो रही रैलियों की थोड़ी झलकियाँ

लुधियाना (पंजाब)

उदयपुर (राज.)

आगरा (उ.प्र.)

भीनमाल (राज.)

नासिक (महा.)

नागपुर (महा.)

राजकोट (गुज.)

मुजफ्फरपुर (बिहार)

जोधपुर (राज.)

बाड़मेर (राज.)

बड़ौदा (गुज.)

आकोट, जि. अकोला (महा.)

उल्हासनगर (महा.)

सागर (म.प्र.)

राऊरकेला (ओड़िशा)

काशीपुर (उत्तराखंड)

बलिया (उ.प्र.)

कानपुर (उ.प्र.)

यवतमाल (महा.)

बलौदा बाजार (छ.ग.)

सिरोही (राज.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

लोक कल्याण सेतु
मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : १७ अंक : ०६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : १९८)
प्रकाशन दिनांक : १५ दिसम्बर २०१३ मूल्य : ₹ ३.५०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सदस्यता शुल्क :
भारत में : (१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५० (३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००
विदेशों में : (१) पंचवार्षिक : US$50 (२) आजीवन : US$125
सम्पर्क पता : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.
★e-mail : lokkalyansetu@ashram.org ✻ ashramindia@ashram.org
★ web-site : www.lokkalyansetu.org ✻ www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS — रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

care WORLD — रोज सुबह ७-०० बजे

मंगलमय — www.ashram.org पर उपलब्ध

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- दैवी सम्पदा ३
- श्री नारायण साँईं द्वारा बलात्कार की स्वीकृति की खबरों का पर्दाफाश ! ४
- पूज्य बापूजी को आयुर्वेदिक चिकित्सा उपलब्ध कराने का न्यायालय का आदेश ४
- सबसे बड़ा धर्म कौन-सा ? ५
- आपको अपनी शक्ति तो दिखानी ही पड़ेगी ५
- अलग तौल-माप क्यों ? - प्रसिद्ध लेखक संजय वोरा ६
- बाधाएँ कब रोक सकी हैं... ७
- भ्रामक प्रचार के झाँसे में हम आ ही नहीं सकते ७
- संत-सम्मेलन, जंतर-मंतर, दिल्ली ८
- हिन्दू धर्म के प्रतिपालक हैं पूज्य बापूजी १०
- करोड़ों महिलाएँ बापूजी के समर्थन में हैं १०
- आरोपों की आँधियों में क्यों टिके हैं भक्त ? ११
- ईश्वरीय वरदानों को जगाने की अष्टसूत्री १२
- बलवर्धन का काल - शीत ऋतु १३
- स्वास्थ्यवर्धक सरल प्रयोग १३
- सावधान रहने की आवश्यकता - श्री अरुण रामतीर्थकर १४
- पश्चिमी पद्धति से जन्मदिवस मनाना स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल १६
- मीडिया का दोगलापन - शिल्पा अग्रवाल १७
- सद्गुरु के सिवा तारणहार कोई नहीं १८

दैवी सम्पदा

- पूज्य बापूजी

जैसे विद्युत के बल से जो साधन चलते हैं उनकी गहराई में विद्युत की, पावर हाउस की सत्ता है। चाहे पंखा हो, गीजर हो, फ्रीज हो, चाहे बड़ी मशीनें हों, उनकी गहराई में पावर हाउस का ही योगदान है। ऐसे ही हमारा शरीर, हमारा मन, बुद्धि, चित्त - सभीमें उस सच्चिदानंद परमात्मा की चेतना की ही महिमा है। तो सारी सृष्टियों की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने की जिसमें सत्ता है, जो ज्ञानस्वरूप है, चेतनस्वरूप है, प्राणिमात्र का सुहृद है उस सत्ता का नाम परमात्मा रख लो, ब्रह्म रख लो, ईश्वर रख लो, हितैषी रख लो, जो भी रख लो। उस परमात्म-सत्ता की तरफ जिसकी दृष्टि होती है उसकी बुद्धि में, उसके तन में, उसके मन में परमात्म-सत्ता के दिव्य गुण उभरते हैं, जिसे कहते हैं 'दैवी सम्पदा'। वह व्यक्ति अभय हो जायेगा। 'मौत मेरी नहीं होती' ऐसा उसे पता चल जायेगा। वह व्यक्ति किसीका बुरा करके बड़ा बनने की बेवकूफी से पार हो जायेगा। वास्तव में ऐसे व्यक्ति ही समाज की सेवा, मंगल, कल्याण कर सकते हैं।

जिसको ईश्वर के अस्तित्व में श्रद्धा नहीं अथवा प्रीति नहीं है, वह दूसरों से वफादार नहीं रह सकता। जितना-जितना आप ईश्वर के संविधान को मानते हैं, **(शेष पृष्ठ ७ पर)**

श्री नारायण साँईं द्वारा बलात्कार की स्वीकृति की खबरों का पर्दाफाश !

जिस प्रकार से बापूजी के सेवक शिवा भाई के बारे में मीडिया में भ्रामक प्रचार किया गया था कि 'शिवा ने स्वीकारा है कि उसके पास एक सेक्स सीडी है ।' यही नहीं जैसे स्वयं बापूजी की धर्मपत्नी लक्ष्मीदेवीजी के बारे में भी बापूजी के विरुद्ध बयान देने की झूठी बात को प्रचारित किया गया था, ठीक वैसे ही यह मिथ्या, मनगढ़ंत दुष्प्रचार किया जा रहा है कि 'नारायण साँईं ने स्वीकार कर लिया है कि लड़की के साथ बलात्कार हुआ है ।' लेकिन जिस प्रकार बाद में शिवा भाई और माताजी के वक्तव्यों से ऐसे दुष्प्रचार की पोल खुल गयी थी, ठीक उसी प्रकार नारायण साँईं के एक चैनल पर आये वक्तव्य से दूध का दूध और पानी का पानी होकर ऐसे सभी आरोप निराधार साबित हुए हैं ।

विचारणीय तो यह बात है कि जहाँ पुलिस कह रही है कि 'नारायण साँईं ने बलात्कार का आरोप स्वीकारा है...' वहीं दूसरी ओर यह भी कह रही है कि 'हम उनके स्वीकारने को प्रूफ के रूप में इस्तेमाल नहीं कर सकते ।' अब आप ही जरा सोचिये कि यदि कोई खुद स्वीकार कर ले कि 'मैंने यह दोष किया है' तो इससे बड़ा प्रूफ पुलिस के लिए और क्या होगा ! लेकिन सच्चाई तो यह है कि स्वयं साँईंजी ने पुलिस द्वारा उपरोक्त बयान दिये जाने के बाद मीडिया के सामने कहा कि 'लड़की के साथ **रेप नहीं हुआ है** ।' तथा साँईंजी के वकील ने भी मीडिया के सामने आकर पुलिस की बात का पूर्णतया खंडन किया । लेकिन अधिकांश मीडियावालों ने इस सत्य को दबाये रखकर खूब अनर्गल प्रचार किया । और तो और, कई बिकाऊ चैनलों ने तो प्रश्नोत्तरी ही दिखा दी कि पुलिस ने क्या-क्या सवाल साँईंजी से पूछे और उनका उन्होंने क्या उत्तर दिया, मानो पुलिस ने उनके सामने ही सारी पूछताछ की हो । वास्तव में इस पूछताछ में प्राप्त जानकारी गुप्त रखी जाती है, उसे वकीलों को भी नहीं बताया जाता तो फिर वह मीडियावालों के हाथ कैसे लग सकती है ! अतः मीडिया में दिखायी जानेवाली ऐसी काल्पनिक प्रश्नोत्तरियों से भी बिल्कुल ही भ्रमित न हों ।

पूज्य बापूजी को आयुर्वेदिक चिकित्सा उपलब्ध कराने का न्यायालय का आदेश

'त्रिनाड़ी शूल नामक कोई बीमारी नहीं होती । अतः बापूजी के इलाज की कोई जरूरत नहीं है ।' इस प्रकार के भ्रामक प्रचार को मा. न्यायाधीश (जोधपुर जिला) के निर्णय से रोक लग गयी है ।

न्यायालय के आदेशानुसार पूज्य बापूजी के इलाज के लिए एक बोर्ड गठित किया गया है । आयुर्वेद विश्वविद्यालय के कुलपति के अनुसार ''आशारामजी के दिमाग की ५वीं नाड़ी में सूजन है । इसे 'अनंत वात' कहते हैं और अनंत वात को ही 'त्रिनाड़ी शूल' कहा जाता है ।''

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू अब शिरोधारा पद्धति से उपचार ले सकेंगे । इस बीमारी का उल्लेख नीता वैद्य द्वारा पहले भी न्यायालय में किया गया था ।

''बापूजी को लगभग पिछले १३-१४ वर्षों से सिर के दाहिने हिस्से में भयंकर पीड़ा होती है । सतत भ्रमण से, जागरण और सतत सम्भाषण से अथवा जल-वायु के परिवर्तन से यह पीड़ा कभी-कभी भयानक रूप ले लेती है । इसे आधुनिक चिकित्सा में 'ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया' और आयुर्वेद में 'अनंत वात' कहा जाता है । ट्राइजेमिनल नर्व की तीन शाखाएँ हैं । अतः इसे त्रिनाड़ी एवं इससे संबंधित दर्द को 'त्रिनाड़ी शूल' कहा जाता है । इसका इलाज शिरोधारा पद्धति से ही सम्भव है ।'' **– साध्वी नीता वैद्य**

सबसे बड़ा धर्म कौन-सा ?

(स्वामी विवेकानंद जयंती : १२ जनवरी)

जब स्वामी विवेकानंदजी को गुरुकृपा से तत्त्वज्ञान प्राप्त हो गया था, उस समय की घटना है। वे काशीपुर के एक बाग में अपने गुरुदेव की परिचर्या कर रहे थे । ज्ञान प्राप्त होते ही स्वामीजी के मन में एक विचार आया कि 'बस, अब मैं संसार त्यागकर समाधिस्थ हो के परमानंद का अनुभव करते हुए सम्पूर्ण जीवन एकांत साधना में बिताऊँगा ।'

अंतर्यामी गुरुदेव ने यह बात जान ली और बोले : ''नरेन्द्र ! तुम्हारा यह स्वार्थपूर्ण परमार्थ उचित नहीं । अभी तुम्हें छुट्टी नहीं है । समाज और संसार से अज्ञान दूर करना भी धर्म है और यह व्यावहारिक धर्मकार्य अब तुम्हें सम्पन्न करना है । एकांत में बैठकर आत्मसुख का आनंद तुम्हें अभी नहीं लेना है। अभी अपनी विद्या, बुद्धि द्वारा नैतिक जागरण करो !''

विवेकानंदजी एक क्षण के लिए तो चौंक गये परंतु दूसरे ही क्षण उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक गुरुआज्ञा शिरोधार्य कर ली । और ब्रह्मानंद में लीन हो एकांत में बैठ जाने की अपेक्षा लोकसेवा में तन-मन से लग गये ।

गुरुआज्ञापालन ही सबसे बड़ा धर्म है। यदि नरेन्द्र गुरुआज्ञा अनुसार जीवन को नहीं बनाते तो आज स्वामी विवेकानंद हो के नहीं चमकते । इसलिए शिष्य के लिए गुरुआज्ञा शिरोधार्य करना और उसके अनुसार अपने जीवन को बना लेना सबसे बड़ा धर्म-कर्म और सब कुछ है । क्योंकि **शिष्य का कल्याण किसमें है यह सद्गुरु से बढ़कर कोई नहीं जानता ।**

आपको अपनी शक्ति तो दिखानी ही पड़ेगी

– श्री अवधेश कुमार, जाने-माने पत्रकार एवं लेखक

२२ अगस्त से यह मामला देश के सामने है, क्या उस समय से मुकदमे कम हुए या बढ़े हैं ? आरोप लगानेवाले और पुलिस के द्वारा अलग-अलग प्रकार से बनाये गये मुकदमे - सब बढ़ते जा रहे हैं। पहले एक आरोप था किसी स्त्री से छेड़छाड़ का, उसके बाद अब हवाला, शराब के आरोप लगाये जा रहे हैं, गलत लोगों से संगति के आरोप लगाये जा रहे हैं तथा यह साबित करने की कोशिश हो रही है कि यह छिटपुट घटना नहीं थी बल्कि बापूजी व नारायण साँईं और अब तो पूरा परिवार ही अपराधी है, जिसको कानूनी भाषा में अभ्यस्त अपराधी कहते हैं और उसके लिए सजा व न्यायालय के विचार करने के तरीके अलग होते हैं। इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि चुनौती को गहराई से समझिय ।

कई बार समय संघर्ष की माँग करता है। कई बार समय सामनेवाले को चुनौती देने की माँग करता है इसीलिए हर संघर्ष में ५ बिंदु आते हैं : (१) सोच (२) संकल्प (३) सुयोग्य लोगों का संग्रह (४) सुनियोजित रणनीति (५) किया हुआ सुनियोजन सक्रिय हो के साकाररूप में प्राप्त करना ।

सबसे पहले हमें संकल्प लेना है कि 'जब तक बापूजी व नारायण साँईं आरोपों से मुक्त नहीं हो जाते हैं, तब तक हम तन-मन-धन से संघर्ष करते रहेंगे ।' इसके लिए हमें दृढ़ निश्चय करना होगा ।

मीडिया आपके कार्यक्रमों को छापे या न छापे परंतु आप लोग अपनी प्रेसनोट भेजिये, उनके पास सच्चाई लेकर जाइये । जनता की ताकत के सामने बहुतों को झुकना पड़ता है । बापूजी की प्रेरणा से जो करोड़ों लोग इस देश में ईमानदार बने हैं, नैतिक बने हैं, समाज के लिए काम कर रहे हैं उनके भी आत्मविश्वास और आत्मबल को बनाये रखना इस भारत के लिए आवश्यक है ।

अलग तौल-माप क्यों ?

– प्रसिद्ध लेखक संजय वोरा

मीडिया चैनलों द्वारा हो रहे पक्षपात एवं अतिरेक को कौन नहीं जानता ! मामला अदालत में हो और आरोपों की पुष्टि न हुई हो तो भी मीडिया में उसकी ट्रायल चलायी जाती है और फैसला भी सुना दिया जाता है। लेकिन जब 'तहलका' पत्रिका के सम्पादक तरुण तेजपाल पर व्यभिचार का संगीन आरोप लगता है, तब उन्हें याद आया कि कोई भी आरोपी जब तक दोषी सिद्ध न हो जाय तब तक मीडिया को उसे निर्दोष गिनना चाहिए। कोई भी प्रसिद्ध हस्ती, चाहे फिर वह संत, राजनेता, उद्योगपति हो या आम आदमी, उस पर किसी महिला द्वारा दुष्कर्म का आरोप लगे तो पहले दिन से ही मान लिया जाता है कि वह आरोप सच्चा है और मीडिया में उसे दिखाया भी इसी तरह से जाता है। तथाकथित 'नारीवादी संस्थाएँ' आरोपी का मुकदमा शुरू होने से पहले ही जाहिर में फाँसी पर लटकाने की माँग करती हैं और मीडिया द्वारा इसे बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाता है।

तरुण तेजपाल के केस में मीडिया में अलग ही प्रकार की दलीलें होने लगीं और तौलमाप भी बदल गये। बाकी मामलों में तो पुलिस और सरकार के ऊपर जोरदार दबाव का माहौल बनाया जाता है कि 'आरोपी को गिरफ्तार किया जाय।' तहलका किस्से में मैनेजमेंट ने पुलिस में फरियाद करने के बजाय मामला आपस में सुलझाकर दबा देने की कोशिश की थी। अन्य किस्सों में पीड़ित महिला के निवेदन को व्यापक प्रसिद्धि दी जाती है और आरोपी द्वारा अपने बचाव में जो कुछ कहा जाता है, उसे आधारहीन प्रस्तुत किया जाता है जबकि तहलका केस में पीड़ित महिला के निवेदन को दबा दिया गया और तेजपाल द्वारा अपने बचाव में कहे गये निवेदन को मीडिया ने खूब बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया।

महिलाओं द्वारा जितनी भी रेप की फरियादें की जाती हैं, वे सभी सच्ची नहीं होतीं; ढेरों रेप केस झूठे साबित होते हैं। परंतु पुलिस और मीडिया द्वारा इन सभी फरियादों को सच्ची मानकर ही कदम उठाये जाते हैं। फिल्म स्टार शाइनी आहुजा पर उसकी नौकरानी ने रेप का आरोप लगाया था। शाइनी आहुजा को गिरफ्तार किया गया। फास्ट ट्रेक कोर्ट में उसे ७ वर्ष की सख्त सजा सुनायी गयी। शाइनी आहुजा ने उच्च न्यायालय में अपील की। वहाँ अपने बयान से पलटते हुए नौकरानी ने कहा कि 'उसके ऊपर शाइनी ने रेप किया ही नहीं।' उच्च न्यायालय ने शाइनी को जमानत पर छोड़ दिया, परंतु तब तक वह ११० दिन जेल में रहकर बदनामी सहन कर चुका था। क्या अब शाइनी आहुजा की गयी इज्जत वापस आ जायेगी ? क्या उसकी नौकरानी को कोई सजा होगी ?

रेप के केस में यदि आरोपी का कोई साथी आरोपी के बचाव में महिला के चरित्र अथवा इरादे के बारे में थोड़ा-सा इशारा करे तो मीडियावाले उस पर टूट पड़ते हैं। तहलका के केस में इसके विपरीत हुआ, तेजपाल ने ई-मेल और एसएमएस द्वारा अपना बचाव करते हुए कहा कि 'गोवा की फाइव स्टार होटल की लिफ्ट में जो हुआ, उस युवती की सहमति से हुआ था।' उसे पत्रकार भी आधार दे रहे हैं और दुष्कर्म की शिकार पीड़िता को पुलिस के समक्ष निवेदन नहीं देने के लिए समझा रहे हैं।

इन पत्रकारों को अब ज्ञान हुआ है कि कोई भी व्यक्ति जब तक दोषी साबित न हो जाय, तब तक उसे निर्दोष मानना चाहिए। हाल ही में जाने-माने संत आशाराम बापू के ऊपर तथाकथित छेड़छाड़ की फरियाद हुई, तब उनके भक्तों ने भी टीवी चैनलों पर यह बात रखी कि बापूजी जब तक अदालत में अपराधी सिद्ध न हो जायें तब तक मीडिया को फैसला सुनाने से दूर रहना चाहिए लेकिन मीडिया ट्रायल खूब चलायी गयी।

(इन तथ्यों से मुखौटे के पीछे छिपे अधिकांश मीडिया के असली इरादे समझ में आ जाते हैं।)

बाधाएँ कब रोक सकी हैं...

झंझावात प्रबल चलते हों, घटा घिरी हो अँधियारी।
कष्ट मुसीबत जैसी भी हो, जिनको लगती हो प्यारी।
हँसते-हँसते पी सकते जो, तीखे विष के प्यालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को ॥

निर्भय सदा विचरते जग में, डरे नहीं जो काल से।
निज मस्ती में मस्त रहें जो, रहें सदा खुशहाल से।
खेल-खेल में पार करें, तूफानी नदियों नालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को ॥

उथल पुथल कितनी हो फिर भी विचलित जरा नहीं होते।
कितने ही इल्जाम लगें पर, धैर्य न अपना वे खोते।
शांत भाव से देख रहे जो, कुदरत की हर चालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को ॥

समय चक्र फिर करवट लेगा, सत्य का डंका गूँजेगा।
एक बार फिर सारा जग यह, बापूजी को पूजेगा।
निंदक जोर लगा ले पूरा, भोंकें काँटें भालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को ॥

दृढ़संकल्प शक्ति हो जिनमें, गुरुचरणों में हो अनुराग।
ज्ञान धर्ममय जिनका जीवन, जो रहते हैं सदा सजाग।
आदर स्नेह सभी देते हैं, धर्म के इन रखवालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को ॥

– श्री ओम प्रकाश मिश्रा

(पृष्ठ ३ का शेष) उतना-उतना आप ईश्वर को मानते हैं और जो ईश्वर को मानता है उसके जीवन में शाश्वत प्रेम, मधुर सुख आता है।

जो जगत से सुखी होना चाहता है वह जगत से लेकर संतुष्ट होगा और जो जगदीश्वर में सुखी है, अपने-आपमें संतुष्ट है वह दूसरे को सुख, शांति, मधुरता देकर संतुष्ट होगा। कितना फासला है !

अतः धनभागी वे हैं जो भगवान वेदव्यासजी के मार्ग पर चलकर अपना, अपने परिवार, अड़ोस-पड़ोस, गाँव, राज्य, अपने देश का ही नहीं विश्व का मंगल करने की क्षमताएँ विश्वेश्वर से जुड़कर पा लेते हैं।

भ्रामक प्रचार के झाँसे में हम आ ही नहीं सकते

– भुट्टो खान

आज का जो दौर चल रहा है संतों को बदनाम करने का, इससे कोई भी फर्क नहीं पड़नेवाला। युगों-युगों से षड्यंत्रकारी निंदक निंदा करते आये हैं लेकिन जब महापुरुष हयात होते हैं तो उनकी कीमत नहीं समझते। स्वामी विवेकानंद को भी बदनाम किया गया। विवेकानंदजी जब अमेरिका में अपनी सनातन संस्कृति का ज्ञान देने गये थे, वहाँ से लौटे तो कुछ निंदकों ने ऐसा प्रचारित किया कि विवेकानंदजी का चरित्रहनन हो गया है। विवेकानंद चरित्रहीन हो गये हैं ऐसा भ्रामक प्रचार करते-करते जब यह खबर उनके मित्र गिरीश बाबू घोष के पास पहुँची तो वे कहने लगे : ''मैं कानों से सुनूँ और अपनी आँखों से देखूँ तो भी नहीं मान सकता कि स्वामी विवेकानंदजी ऐसा कर सकते हैं।'' ऐसे ही हम बापूजी के साधक, जिनको बापूजी ने ऐसा ज्ञान दिया, ऐसी दिशा दी, उन्नत होने के संस्कार दिये, जिनके द्वारा हम उन्नत हो रहे हैं तो ऐसे हम सब कभी भी यह स्वीकार नहीं कर सकते हैं कि हमारे संत ऐसे हो सकते हैं। कोई चाहे सूरज को कितना भी ढँकना चाहे, उल्लू चाहे कितना भी कहे कि सूरज है ही नहीं तो क्या सूरज का अस्तित्व मिट जायेगा ? उल्लू की आँखों से सूरज को नहीं देखा जा सकता, सूरज को देखने के लिए मनुष्य की आँख चाहिए। उल्लू चाहे सूरज को कितना भी ढँक ले लेकिन वह अपने तेज-प्रकाश से चमकता है। गंगाजी को कोई कितना भी रोके, वे सबको शीतलता देती हैं और गंगाजी को जितना रोकेंगे, उतना ही प्रवाह और बढ़ेगा। ऐसे ही आज बापूजी की ज्ञानरूपी गंगा को वे रोकना चाहते हैं तो यह सम्भव ही नहीं है, वह तेज प्रवाह सभी कुप्रचारकों को, निंदकों को बहा देगा।

संत-सम्मेलन, जंतर-मंतर, दिल्ली

सूरज पर थूकनेवाले का ही मुँह गंदा होता है

- महामंडलेश्वर स्वामी कमलानंदजी महाराज

वास्तव में बापूजी महापुरुष हैं। वे अवतार के रूप में हमारे बीच आये तो यह हमारी संस्कृति का गौरव है। इतिहास साक्षी है कि हमारी भारतीय संस्कृति पर बहुत कुठाराघात किये गये, हमारे महापुरुषों को बदनाम किया गया परंतु हम सूरज पर अगर थूकें तो थूक हमारे ऊपर ही पड़ेगा।

ऐसे लोग भी हैं जो ऐसा षड्यंत्र करके महापुरुषों पर लांछन लगाकर अपने पाप का घड़ा भर के भगवान, प्रकृति को विवश करते हैं कि प्रकृति इन लोगों का बढ़िया से ऑपरेशन करे। यह परिवर्तन का समय है और परिवर्तन तभी होता है जब हमारे महापुरुषों के ऊपर कुछ-न-कुछ ऐसे षड्यंत्र होते हैं।

हमारे महापुरुषों पर ऐसे लांछन लगते आये हैं। हमारे भक्त इतने संकल्पवान हैं कि आज बापू हमारे हृदय में हैं और आगे भी रहेंगे। इनकी आस्था कोई छीन नहीं सकता है। जिस तरह से स्वामी नित्यानंदजी, शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी और हमारे अन्य संतों पर लगाये गये आरोप सिद्ध नहीं हुए उसी तरह एक दिन हमारे बापू भी निर्दोष निकलेंगे और हम सबके बीच में आयेंगे।

हिन्दू समाज इस साजिश से वाकिफ है

- श्री चारुदत्त पिंगले, राष्ट्रीय मार्गदर्शक, हिन्दू जनजागृति समिति

इस षड्यंत्र का उद्देश्य है बापूजी के भक्तों को बापूजी से दूर करना और तमाम हिन्दुओं की आस्था हमारे धर्म से उठाना। परंतु भक्तों ने उनके षड्यंत्र को विफल कर दिया है। भक्त संगठित हैं, बापू के चरणों में श्रद्धा रखे हुए हैं और हिन्दू समाज भी साजिश से वाकिफ है। यही षड्यंत्र के विफल होने का पहला प्रमाण है।

परम पूज्य बापूजी और हिन्दू धर्म - ये एक सिक्के के दो पहलू हैं और बापू पर जो हमला हो रहा है वह हिन्दू धर्म पर ही हमला हो रहा है।

संकल्प लें कि सच्चाई जन-जन तक पहुँचायेंगे

- स्वामी चक्रपाणि महाराज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, संत महासभा

परमात्मा के प्रति कोई गलती करे तो गुरु माफ करवा देंगे, क्षमा के लिए रास्ते बता देंगे परंतु गुरु से जो छल-कपट और बेईमानी करता है, गुरु को जो फँसाने का कार्य करता है उसे परमात्मा कभी माफ नहीं करता है। संतों ने समाज को बहुत कुछ दिया है। आनेवाले कल में वह दिन दूर नहीं कि जितने आरोप लगानेवाले हैं, जितनी बापूजी को फँसानेवाली एजेंसियाँ हैं, देखना, वे भी 'हरि ॐ... हरि ॐ...' का जप साधकों के साथ करेंगे।

आज संकल्प लें कि 'जो २१वीं सदी का सबसे बड़ा अन्याय हुआ है पूज्य बापूजी और उनके परिवार पर और सनातन धर्म पर इससे हम इन्हें मुक्त करायेंगे, सच्चाई को जन-जन तक पहुँचायेंगे।' क्योंकि

संकल्प न हो यदि जीवन में,
गंतव्य कहाँ से मिलता है।
संघर्ष न हो यदि जीवन में,
इतिहास कहाँ बदलता है॥

बापूजी ने धर्मांतरण के कार्य में रोक लगायी है

- श्री विजय भारद्वाज, प्रवक्ता विश्व हिन्दू परिषद, पंजाब

जो संतों को इस तरीके से परेशान करता है, उसका कुल-का-कुल नाश हो जाता है। बापू आशारामजी कोई आम संत नहीं हैं। उनका मकसद सिर्फ नाम का प्रचार करने का नहीं है। उनके मन में एक ऐसी

पीड़ा थी कि हिन्दुओं को धर्मांतरित कर ईसाई धर्म का प्रचार पूरे हिन्दुस्तान के अंदर किया जा रहा है। बापूजी ने ऐसे इलाकों के अंदर अपने आश्रम बनाये, विद्यालय खोले, दवाखाने चलाये। इससे धर्मांतरण के कार्य में रोक लगी। इसीलिए बापूजी के ऊपर केस लगाया गया है और उनके आश्रमों को नुकसान पहुँचाने के कुप्रयास किये जा रहे हैं। मगर हिन्दू समाज इस बात को बड़े अच्छे तरीके से समझता है कि यह बापूजी के ऊपर षड्यंत्र है और षड्यंत्र का मुकाबला पूरा हिन्दू समाज डट के कर रहा है।

संत बहुत दूर का देखते हैं

– अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त राकेश पहलवान, गोरखपुर (उ.प्र.)
(१९८४ व ८५ में थायलैंड में चैम्पियन)

संत बहुत दूर का देखते हैं। ओलम्पिक में कुश्ती पर प्रतिबंध लगा था। इस बार प्रयागराज कुम्भ में बापूजी की आज्ञा से उनके सामने कुश्ती का आयोजन किया गया। उसका प्रभाव यह हुआ कि पहली बार भारतवर्ष में ओलम्पिक में कुश्ती को सबसे अधिक वोटों से मान्यता मिली। पढ़े-लिखे लोग यह जानते होंगे। इतना ही नहीं, विश्व चैम्पियनशिप में कभी-कभी भारत को एकाध मेडल मिलता था लेकिन पहली बार बापू के कुश्ती देखने के बाद विश्व चैम्पियनशिप में ३ मेडल भारतवर्ष को मिले हैं। यह है संतों का आशीर्वाद ! हमारे देश का, हमारी परम्पराओं का पुनरुत्थान करके उसको विश्वगुरु पद तक पहुँचाने में रत इन महान संत के साथ आज जो अन्याय हो रहा है वह अति निंदनीय है।

नीलम दूबे, मीडिया प्रवक्ता :

पूज्य बापूजी पर जो आरोप लगवाये गये हैं वे सब झूठे, बेबुनियाद व एकदम मनगढ़ंत हैं। इनमें एक प्रतिशत भी सच्चाई नहीं है और ऐसा कभी सम्भव ही नहीं है। अब षड्यंत्रकारी एक नया ही तरीका ढूँढ़ रहे हैं और वह है हमारे ही लोगों के बीच फूट डालने का। मैं आप सभी से यह प्रार्थना करती हूँ कि आप ऐसे षड्यंत्रकारियों से सावधान रहें।

महामंडलेश्वर परमात्मानंदजी महाराज :

बादशाह कहीं भी रहता है पर सारे हिन्दुस्तान में उसका राज्य होता है। हमारे परमात्मा, हमारे बापूजी कहीं भी रहें लेकिन वे हमारे हृदय में हैं। जब किसीके नाश का समय आता है तो वह दूसरों के लिए षड्यंत्रों का सहारा लेता है - ऐसा वेद कहते हैं।

षड्यंत्रकारियों की नैया कभी पार नहीं होगी।
बापू आशारामजी जैसे संतों की कभी हार नहीं होगी॥

हिन्दुत्व पर २१वीं शताब्दी का सबसे बड़ा हमला

- श्री अखिलेश तिवारी

अगर हिन्दुत्व पर २१वीं शताब्दी का सबसे बड़ा कोई हमला हुआ है तो वह संत आशारामजी बापू पर हुआ है। सम्पूर्ण भारत का मीडिया ३ महीने से लगातार रोज ४ से ५ घंटे निरंतर भारत की संत-अस्मिता पर प्रहार कर रहा है। हमको विश्वास है कि आनेवाले समय में पूज्य बापूजी निष्कलंक सूर्य के समान चमकते हुए फिर से सम्पूर्ण विश्व में भारत के सनातन धर्म का संदेश देंगे।

ज्ञानवर्धक पहेलियाँ

(१) परम वंदनीय धरती के, मानव रूप में देव हैं।
चिर आदरणीय हो जाता वो, जो करता तीन की सेव है॥

(२) शरीर, मन, बुद्धि, प्राण, चित्त, चिंतन से न्यारा है।
विभु, व्याप्त, निर्लेप, ओत-प्रोत जग सारा है॥

(३) जिस घर में वास नहीं, श्मशान के समान है।
अनुसरण जो इनका करता, बन जाता महान है॥

उत्तर : (१) माता-पिता और गुरुदेव
(२) परमात्मा (३) सत्संगिदेव

हिन्दू धर्म के प्रतिपालक हैं पूज्य बापूजी

– श्री सोमदत्त कौशिक
प्रसिद्ध ज्योतिष-विशेषज्ञ

हमारे हिन्दू धर्म को तोड़ने के लिए धर्मांतरणवाले बहुत तरीकों से काम कर रहे हैं । हमारे आस्था के केन्द्रों पर कुठाराघात किया जा रहा है। पहले कई मंदिरों को तोड़ा गया और अब जो साधु-संत हैं उन पर प्रहार किया जा रहा है । बापूजी जो पूज्य हैं, उनको बलात्कारी की संज्ञा दे रहे हैं और जिन माँ, बहन, बेटी को हमारे हिन्दुस्तान में देवी की तरह पूजा जाता है, उनको ये दलाल बता रहे हैं । मेरे विचार में बापूजी हिन्दू धर्म के प्रतिपालक हैं और इनके प्रति करोड़ों लोगों की जो आस्था है, वह सत्य है । जो इनके ऊपर आरोप लगाये गये हैं, वे निराधार हैं। कृपालुजी, नित्यानंदजी, शंकराचार्यजी इत्यादि कई साधुओं पर जो पहले आरोप लगाये गये थे, वे सब बेबुनियाद साबित हुए ।

इसमें एक ही काम किया जा रहा है कि बार-बार हिन्दुओं के जो आस्था-केन्द्र हैं, उन पर प्रहार करो तो एक करोड़ लोगों में से एक लाख भ्रमित होंगे, १० हजार की आस्था कम होगी, हजार धर्म-परिवर्तित हो जायेंगे व हजार हिन्दुओं के दुश्मन बन जायेंगे । यदि कोई एक हिन्दू अपने धर्म को छोड़ के दूसरे धर्म में परिवर्तित होता है तो उसका मतलब यह है कि हिन्दू धर्म का एक दुश्मन पैदा हुआ । और आज ये हिन्दू धर्म के हजारों दुश्मन पैदा करना चाहते हैं, जिसमें ये कभी कामयाब नहीं होंगे क्योंकि इस देश में बापूजी जैसे संत हैं जो जनता को शांति व मार्गदर्शन दे रहे हैं । हिन्दुस्तानियों को बापूजी पर हो रहे अत्याचारों का विरोध करना चाहिए और संस्कृति-रक्षा हेतु बापूजी को सहयोग देना चाहिए ।

करोड़ों महिलाएँ बापूजी के समर्थन में हैं

– डॉ. रोशनी तोलानी, रनिंग कोस्मेटोलोजी एंड स्लिमिंग सेंटर, उल्हासनगर

पूज्य बापूजी के ऊपर जो ये आरोप लगाये जा रहे हैं महिला आश्रम को लेकर, वे सब एकदम बेबुनियाद हैं क्योंकि मैंने खुद वहाँ पर ११ दिन का अनुष्ठान किया है। वहाँ पर ऐसा मुझे बिल्कुल भी नहीं दिखा कि इस तरह की कोई भी चीज होती है । भारतीश्रीजी और लक्ष्मी माताजी पर जो आरोप लगाये जा रहे हैं, वे सब बेबुनियाद हैं । किसी भी आरोप में कोई सच्चाई नहीं है ।

जैसे मैं बापूजी की साधिका हूँ, उनके समर्थन में हूँ, ऐसे देशभर में लाखों-करोड़ों महिलाएँ हैं जो बापूजी के समर्थन में हैं ।

पूज्य बापूजी के खिलाफ साजिश करनेवाले काफी लोग हैं । इसमें एक बड़ी भूमिका विदेशी कम्पनियों व मिशनरियों की है । करोड़ों लोगों ने बापूजी का सत्संग सुनकर सिगरेट, दारू, तम्बाकू आदि व्यसन छोड़ दिये हैं, जिससे इन सब कम्पनियों को काफी नुकसान हो रहा है । इस वजह से उन लोगों ने यह षड्यंत्र रचा है ।

पुण्यदायी तिथियाँ

८ जनवरी : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से रात्रि ९-१३ तक)

१४ जनवरी : मकर संक्रांति (पण्यकाल : दोपहर १-११ से सूर्यास्त तक) उत्तरायण, चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (सुबह ७-२२ से १५ जनवरी सुबह ७-५२ तक) (ॐकार का जप अक्षय फलदायी)

१६ जनवरी : माघ स्नानारम्भ, गुरुपुष्यामृत योग (दोपहर १-१४ से १७ जनवरी सूर्योदय तक)

३० जनवरी : अहमदाबाद आश्रम स्थापना दिवस

'बापूजी तो हमारे दिल में हैं...'

आरोपों की आँधियों में क्यों टिके हैं भक्त ?

इंडियन एक्सप्रेस । संत आशारामजी बापू की गिरफ्तारी के बाद भी उनके आश्रमों में सैकड़ों-हजारों भक्त रोज ध्यान, भजन, साधना के लिए आते हैं और ऑडियो-विडियो के माध्यम से बापूजी का सत्संग सुनते हैं । उनका कहना है कि 'बापूजी पर लग रहे सभी आरोप बेबुनियाद और निराधार हैं ।'

पाटन (गुज.) के ३० वर्षीय ब्रिजेश पटेल जो कि एक मिल मालिक हैं, उन्हें बापूजी के निर्दोष होने का पूरा विश्वास है । वे कहते हैं : ''बापूजी महायोगी हैं । उन्होंने हमें ऐसे संस्कार दिये हैं कि हम पूर्ण संयम से रहते हैं और हममें किसी प्रकार की लत नहीं है ।''

अहमदाबाद में रहनेवाले २६ वर्षीय तपस्वी पटेल चार्टर्ड एकाउंटेंसी के अंतिम वर्ष के छात्र हैं । उनका पूरा परिवार बापूजी से १९८९ से जुड़ा है । तपस्वी कहते हैं : ''मेरे जीवन में बापूजी से जुड़ने से बहुत उन्नति हुई है । जब हम पहली बार बापूजी के पास गये थे, हम पैसों की तंगी में थे । बापूजी ने आश्वासन दिया कि ''सब ठीक हो जायेगा ।'' उसके बाद से सब अच्छा ही होता गया है । १८ महीने पहले मेरे पिता को कैंसर हो गया था और डॉक्टरों ने कहा कि ''अंतिम स्टेज है ।'' हम बापूजी के पास गये, बापूजी ने कहा कि ''चिंता मत करो ।'' अभी हमारे पिताजी के सारे टेस्ट नॉर्मल हैं । डॉक्टर बोलता है कि ''यह चमत्कार है'' लेकिन यह बापूजी की कृपा है ।''

तपस्वीजी की माता रंजना बहन मानती हैं कि ''बापू की गिरफ्तारी एक राजनैतिक षड्यंत्र है । बापूजी धर्मांतरण के खिलाफ खुल्ला बोलते हैं इसीलिए उनके खिलाफ ये साजिश हो रही है । मेरी बेटी जो अभी २९ साल की है, वह कई सालों से बापूजी के आश्रम में जाती है और उसने महिला आश्रम में कई मंत्रानुष्ठान भी किये हैं; उसे तो कभी कोई ऐसी तकलीफ नहीं हुई ।''

ऐसे ही ५६ वर्षीय अजय मालवी, भोपाल में डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस हैं । उनका पूरा परिवार पूज्य बापूजी से प्राप्त भगवन्नाम को बड़े आदर व श्रद्धा से जपता है । मालवीजी कहते हैं : ''मेरे मुश्किल समय में बापूजी ने मुझको दिशा दी । एक पुलिस अधिकारी का जीवन बहुत तनावभरा होता है लेकिन बापूजी ने मेरे जीवन में नयी शक्ति भर दी है ।''

दुबई में रहनेवाले ४५ वर्षीय किशन भाटिया कंस्ट्रक्शन का व्यापार करते हैं । १३ साल पहले उनके एक रिश्तेदार उन्हें पूज्य बापूजी के सत्संग में ले गये थे, जिससे वे बहुत प्रभावित हुए । उस समय उनका एक छोटा-सा व्यापार था । २००३ में बापूजी से मिलने के बाद उनका पूरा जीवन बदल गया । भाटियाजी कहते हैं : ''पूज्य बापूजी से मिलने पर ऐसा लगा मानो मेरा सपना साकार हो गया । बापूजी ने मुझे भगवन्नाम मंत्र दिया और रोज जपने को कहा । उसके बाद मुझे जल्द ही दुबई जाने का अवसर मिला; जहाँ मैंने कंस्ट्रक्शन का व्यापार शुरू किया जो कि बहुत फला-फूला ।'' अपने सच्चे अनुभवों को याद करते हुए भाटियाजी कहते हैं : **''बापूजी पर लगाये गये आरोप झूठे हैं । हमारे गुरुदेव बहुत महान हैं, उन्हें फँसाया जा रहा है ।''**

बापूजी के भक्तों की श्रद्धा हिल नहीं रही है । एक भक्त ने तो अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा : ''लोग कुछ भी कहें, बापूजी तो हमारे दिल में थे, हैं और रहेंगे ।''

बापू के शिष्यों ने बढ़ाया मतदान प्रतिशत

मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के अखबारों में प्रकाशित समाचारों के अनुसार देश के चार राज्यों में भारी मतदान हुआ और उसमें भी आशारामजी के शिष्यों ने बढ़चढ़कर भाग लिया ।

ईश्वरीय वरदानों को जगाने की अष्टसूत्री

प्रत्येक व्यक्ति के अंदर ईश्वर के वरदान छुपे हुए हैं, प्रतिभाओं के भंडार भरे हैं। जिन्होंने अपने लक्ष्य को निर्धारित किया, अपने समय, श्रम और साधन को सही दिशा में नियोजित किया वे सफलता के शिखर पर आरूढ़ हुए हैं। परंतु जो इन्हें नजरअंदाज करते रहे, कुसंग के कुचक्र में फँस गये, उनके वे ईश्वरीय वरदान क्षीण होते-होते आयु के साथ समाप्त हो गये। किशोरावस्था जीवन का एक ऐसा मोड़ है जिसका हरेक कर्म भावी जीवन को प्रभावित करता है । अतः सावधानीपूर्वक कदम उठाना चाहिए।

१७ वर्ष के श्रीकृष्ण ने अपने से कई गुना अधिक विकराल चाणूर, मुष्टिक, कंस आदि अनाचारी अत्याचारियों से इस धरा को मुक्त किया था। इसी उम्र में अर्जुन धनुर्विद्या में पारंगत एवं प्रवीण हो गये थे और युधिष्ठिर सत्यनिष्ठा के पुजारी हो चुके थे। आचार्य शंकर किशोरावस्था के पड़ाव तक तो अपने ज्ञान, कर्म, भक्ति, मंत्र आदि अनेकों विद्याओं में प्रवीण होकर जगतविख्यात हो गये थे । स्वामी रामतीर्थ, भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज, पूज्य संत श्री आशारामजी बापू आदि महापुरुषों ने युवावस्था में ही मानव-जीवन के परम लक्ष्य 'आत्मसाक्षात्कार' को पा लिया था।

शहीद भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल आदि क्रांतिकारियों ने अपने लहू और प्राणों से जो शहादत देकर देश की परतंत्रता की बेड़ियाँ तोड़ीं, वह उम्र भी लगभग किशोरावस्था की ही थी । इस पुण्यभूमि पर इतिहास की धारा को मोड़नेवाली सिंहनी कुमारियों की भी कमी नहीं है। सीता, सावित्री, पार्वती से लेकर दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई ने किशोरावस्था में तप व तलवार की चमक से अनहोनी को होनी में बदल दिया।

हर युवक-युवती एवं हर मनुष्य ऐसा पुरुषार्थ कर सकता है । आवश्यकता है तो बस उचित मार्गदर्शन की, सोये हुए आत्मविश्वास को जगाने की । ये योग्यताएँ जगाने के लिए बापूजी के सान्निध्य में दो-तीन ध्यानयोग शिविर आपके जीवन में चार चाँद लगा देंगे। आइये, जानें कुछ सुवर्ण-सूत्रों को :

(१) पूर्ण सफलता के लिए मानव-जीवन के परम लक्ष्य ईश्वरप्राप्ति पर दृष्टि रखना आवश्यक है। अपना प्रत्येक विचार, कर्म, वचन उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही हो तो चाहे आप उद्योगपति बनें, चाहे प्राध्यापक, चाहे और कुछ, आप अपने को तृप्त, कृतकृत्य पाओगे।

(२) अपने समय, श्रम और साधन को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लगाना चाहिए।

(३) मनोरंजन के साधन स्वास्थ्य व ज्ञान वर्धक हों। फूहड़ दृश्य देखना, गप्पबाजी करना ये हममें विषाक्त विचार-भावों को जन्म देते हैं।

(४) खानपान सात्त्विक तथा दिनचर्या को नियमित रखना चाहिए।

(५) आकर्षण एवं लगाव श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता की ओर होना चाहिए।

(६) सदाचार में इतने व्यस्त हों कि कुसंग, खराब आदतों में पड़ने के लिए समय ही न बचे।

(७) सोच सकारात्मक रखें, कभी भी निराश न हों।

(८) नैतिक मूल्यों के विकास, सुषुप्त शक्तियों के जागरण और प्राप्त शक्तियों के सदुपयोग हेतु ईश्वर में दृढ़ आस्था, ईश्वरप्राप्त महापुरुषों का सत्संग, दीक्षा, उनके उपदेशों का अध्ययन करें।

यह अष्टसूत्री जितनी सरल है, उतनी ही हितकारी भी है। आप इसे जीवन में उतारकर महान परिवर्तन का अनुभव कर सकते हैं।

बलवर्धन का काल - शीत ऋतु

शीत ऋतु में पौष्टिक पदार्थों व रसायन द्रव्यों का सेवन कर सम्पूर्ण वर्ष के लिए आवश्यक बल को युक्तिपूर्वक संगठित करना चाहिए।

बलप्रदायक प्रयोग

रात को ५० ग्राम देशी चने पानी में भिगो दें। सुबह उनमें हरा धनिया, पालक, गाजर, पत्तागोभी, मूली सब कच्चे ही काट के डाल दें। इसमें पिसी हुई काली मिर्च व सेंधा नमक मिलाकर नींबू निचोड़ दें। इसे नाश्ते के रूप में खूब चबा-चबाकर खायें। दोपहर के भोजन के बाद पके हुए १-२ केले खायें। यह प्रयोग पूरे शीतकाल में करने से शरीर पुष्ट, सुडौल व बलवान बनता है। रक्त की भी वृद्धि होती है।

एक चम्मच मक्खन, उतनी ही पिसी मिश्री व एक चुटकी पिसी हुई काली मिर्च को खूब मिलाकर चाट लें। ऊपर से कच्चे नारियल (अष्टमी को नारियल न खायें) के २-३ टुकड़े व थोड़ी-सी सौंफ खा लें। बाद में १ कप गर्म दूध पियें। इसे और पौष्टिक बनाने के लिए २-३ बादाम रात को पानी में भिगोकर सुबह चंदन की तरह घिस के मक्खन-मिश्री में मिलाकर लें।

पौष्टिक छुहारा

खजूर को सुखाकर छुहारा बनाया जाता है। सुलभ व सस्ते छुहारे अपने में शक्ति का खजाना सँजोये हुए हैं। इनमें लौह, कैल्शियम, फॉस्फोरस व ताँबा विपुल मात्रा में पाया जाता है। दूध के साथ छुहारों का सेवन करने से रक्त व मांस की वृद्धि होती है। अस्थियाँ मजबूत बनती हैं। वीर्य पुष्ट होता है। हृदय व फेफड़ों को बल मिलता है। दुर्बलता के कारण होनेवाला अनियमित मासिक समय पर होने लगता है। स्वप्नदोष तथा विभिन्न व्याधियों के कारण उत्पन्न दुर्बलता, हृदय की कमजोरी व रक्ताल्पता में दूध के साथ छुहारों का सेवन बहुत ही लाभदायी है। इससे कब्ज तथा कमर का दर्द भी दूर होता है। यह प्रयोग रात को करने से स्वर सुरीला होता है। बालकों की बिस्तर में मूत्र त्यागने की तकलीफ दूर होती है।

सेवन-विधि : २०० मि.ली. दूध में उतना ही पानी व ३-४ छुहारे (गुठली निकालकर) मिला के धीमी आँच पर पानी जल जाने तक उबालें। ठंडा होने पर छुहारे खाकर ऊपर से दूध पियें। दूध को अगर लोहे के बर्तन में उबाला जाय तो विशेष शक्तिदायक होगा।

इसके सेवन के बाद डेढ़-दो घंटे तक पानी नहीं पीना चाहिए। ३-४ माह तक लगातार सेवन करने से मुख का सौंदर्य व कांति बढ़ती है। केश घने व लम्बे होते हैं। यह प्रयोग सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए बलकारी है।

टिप्पणी : श्वास के रुग्ण केवल २-२ छुहारे सुबह-शाम खूब चबा-चबाकर खायें। इससे फेफड़ों को शक्ति मिलती है एवं कफ का शमन होता है।

स्वास्थ्यवर्धक सरल प्रयोग

✻ पुराने ज्वर में रोगी को घी और दूध अवश्य देना चाहिए। **'सर्वज्वराणां जीर्णानां क्षीरं भैषज्यमुत्तमम्'** इस वचन से पुराने ज्वर में दूध को उत्तम औषध माना है। नये ज्वर में दूध को साँप के जहर जैसा हानिकारक कहा गया है।

✻ सब प्रकार के उदर-रोगों में मट्ठे और गौमूत्र का सेवन अति लाभदायक है।

✻ स्वप्नदोष में रात्रि को मधुर पदार्थ का सेवन, रात्रि को भात खाना, अजीर्ण में भोजन, वातल पदार्थों का अति सेवन, खट्टा पदार्थ खाना, तम्बाकू, चाय आदि हानिकारक हैं। प्रातः, सायं स्वच्छ वायु में घूमना, दीर्घ श्वास लेना, सात्त्विक भोजन, ईश्वर-स्मरण, रात्रि को भोजन के स्थान पर केवल दूध पीना - ये सब लाभदायक हैं।

सावधान रहने की आवश्यकता

सनातन धर्म के संतों ने जब-जब व्यापक रूप से समाज को जगाने का प्रयास किया है, तब-तब उनको विधर्मी ताकतों के द्वारा बदनाम करने के लिए षड्यंत्र किये गये हैं, जिनमें वे कभी-कभी हिन्दू संतों को भी मोहरा बनाकर हिन्दू संतों के खिलाफ दुष्प्रचार करने में सफल हो जाते हैं। यह हिन्दुओं की दुर्बलता है कि वे विधर्मियों के चक्कर में आकर अपने ही संतों की निंदा सुनकर विधर्मियों की हाँ में हाँ करने लग जाते हैं और उनकी हिन्दू धर्म को नष्ट करने की गहरी साजिश को समझ नहीं पाते। इसे हिन्दुओं का भोलापन भी कह सकते हैं। कुछ तो इतने भोले हैं कि जब किसी बड़े संत पर षड्यंत्रकारी आरोप लगाते हैं तो खुश होते हैं कि 'अब हम बड़े हो जायेंगे' और वे नं. 1 बनने की कवायद करने लग जाते हैं। उनको पता नहीं कि वे भी आगे चलकर षड्यंत्रकारियों के शिकार होंगे। ऐसे लोग भी विधर्मियों के षड्यंत्रों से अपनी संस्कृति की रक्षा करने के बदले उनके पिट्ठू बन जाते हैं।

स्वामी विवेकानंदजी जब अमेरिका में सनातन धर्म की महिमा गाकर भारत का गौरव बढ़ा रहे थे तब वहाँ कुछ हिन्दुओं ने ही उनकी निंदा करना, कुप्रचार करनेवालों को सहयोग देना शुरू कर दिया, जिनमें मुख्य थे वीरचंद गांधी और प्रतापचन्द्र मजूमदार। प्रतापचन्द्र मजूमदार ईसाई मिशनरियों की कठपुतली बन गया। 'विवेकानंदजी एक विषयलम्पट साधु, विलासी युवान और हमेशा जवान लड़कियों के बीच रहनेवाला चरित्रहीन पुरुष है' - ऐसा अमेरिका के प्रसिद्ध अखबारों में लिखने लगा। इन दुष्प्रचारकों ने विवेकानंदजी के भक्त की नौकरानी का विवेकानंदजी के द्वारा यौन-शोषण किया गया ऐसी मनगढ़ंत कहानी भी छाप दी। जिस भवन में स्वामी विवेकानंदजी का प्रवचन होता उसके सामने वे लोग एक अर्धनग्न लड़की के साथ विवेकानंदजी के फोटो के पोस्टर भी लगा देते थे। फिर भी स्वामी विवेकानंदजी के अमेरिकन भक्तों की श्रद्धा वे हिला न सके। तब प्रतापचन्द्र मजूमदार भारत आया और उनकी निंदा करने लगा। विवेकानंदजी पर ठगी, अनेक स्त्रियों का चरित्रभंग करने के आरोप लगाने लगा। 'स्वामी विवेकानंदजी भारत के सनातन धर्म के किसी भी मत के साधु ही नहीं हैं' - ऐसा दुष्प्रचार करने लगा।

विधर्मियों द्वारा षड्यंत्रों के तहत लगवाये गये ऐसे अनेक आरोपों को झेलते हुए भी स्वामी विवेकानंदजी सनातन धर्म का प्रचार करते रहे। उन्हें आज समस्त विश्व के लोग एक महापुरुष के रूप में आदर से देखते हैं लेकिन मजूमदार किस नरक में सड़ता होगा हमें पता नहीं।

महानिर्वाणी अखाड़ा के महामंडलेश्वर श्री नित्यानंदजी जैसे समझदार तो कहते हैं : ''किसी भी हिन्दू संत को यह अधिकार नहीं है कि दूसरे संत की निंदा करे। उनमें से बहुत लोग जो आशारामजी बापू पर टीका-टिप्पणी कर रहे हैं, वे संत ही नहीं हैं। जो भी बापू की निंदा कर रहे हैं, वे संत नहीं हैं। अगर आप इस समय आशारामजी बापू का समर्थन नहीं करना चाहते तो कम-से-कम चुप रहो। तुम क्यों सब जगह जा-जाकर (या लेख लिखकर) गलत बोल रहे हो जबकि न्यायालय में अभी तक कुछ भी साबित नहीं हुआ है।''

लेकिन नासमझ लोग, जो संत नहीं हैं, वे अपनी अल्पबुद्धि का परिचय देते हैं। एक नासमझ लेखक ने लिखा है : ''यह आरोप सत्य है या असत्य इसका निर्णय तो न्यायपालिका करेगी परंतु इस प्रकार की घटना संत-महात्माओं को कलंकित करती है।''

यदि न्यायपालिका का निर्णय आया नहीं है तो तुम क्यों निर्णय देकर संत-महात्माओं के कलंकित होने की बात स्वीकार करते हो ? आरोप लगनेमात्र से यदि महात्मा कलंकित हो जाते तो वर्तमानकालीन शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी,

कृपालुजी महाराज, स्वामी केशवानंदजी आदि तथा पूर्वकालीन संत जैसे स्वामी विवेकानंदजी, नरसिंह मेहता, संत एकनाथजी आदि पर भी कई दुष्टों ने आरोप लगाये थे। आरोप लगानेवालों ने तो भगवान को भी नहीं बख्शा था। भगवान श्रीकृष्ण पर भी स्यमंतक मणि चुराने का आरोप और अन्य कई प्रकार के आरोप लगाये गये थे। भगवान श्रीरामचन्द्रजी पर भी आरोप लगा था कि बालि को उन्होंने युद्धधर्म की नीति का उल्लंघन करके मारा था और महान पतिव्रता नारी सीता देवी पर भी एक धोबी ने चरित्रभ्रष्ट होने का आरोप लगाया था। इससे क्या उनकी भगवत्ता कलंकित हो गयी ? महात्मा बुद्ध पर भी तत्कालीन दुष्ट अधर्मियों ने आरोप लगाये थे तो क्या इससे उनकी महानता कलंकित हो गयी ?

दूसरा, बंगाली बाबा या किसी अन्य साधु के दृष्टांत से सभी महापुरुषों को तौलना नासमझी है। जीवन्मुक्त महापुरुषों के व्यवहार में भिन्नता होने पर भी वे सब ज्ञाननिष्ठा में पूर्ण होते हैं। वेदव्यासजी के पुत्र शुकदेवजी बड़े त्यागी थे लेकिन उनको ज्ञान लेने के लिए गृहस्थी महापुरुष राजा जनक के पास जाना पड़ा। रामकृष्ण परमहंस त्यागी परमहंस थे लेकिन उनके शिष्य विवेकानंदजी देश-विदेश में धर्म-प्रचार के लिए भ्रमण करते थे, पुरुष और स्त्री दोनों को शिक्षा-दीक्षा देते थे इसलिए वे महान संत नहीं थे यह कहना उचित नहीं है। राजा जनक, महात्मा बुद्ध, आद्य शंकराचार्यजी आदि अनेक संतों-महापुरुषों ने स्त्रियों के उद्धार के द्वारा समाज का उद्धार करने के लिए स्त्रियों को शिक्षा-दीक्षा दी।

कुछ संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त नासमझ लोग शास्त्रों का गलत अर्थघटन करके समाज में भ्रांतियाँ फैलाते हैं कि 'स्त्री का गुरु तो पति ही है, अतः अन्य गुरु का निषेध अपने-आप हो जाता है।' उन लोगों को शास्त्र के दृष्टांतों से ही बता सकते हैं कि उनकी मान्यता गलत है। भगवान शंकर ने अपनी पत्नी पार्वती को वामदेव ऋषि से दीक्षा दिलायी थी। शबरी के गुरु उसके पति नहीं थे, भगवान श्रीराम भी नहीं थे, एक महापुरुष मतंग ऋषि शबरी के गुरु थे। मीराबाई के गुरु उनके पति नहीं थे, भगवान कृष्ण को भी मीरा ने गुरु नहीं बनाया, संत रैदासजी को गुरु बनाया। सहजोबाई ने पति को गुरु नहीं बनाया, संत चरनदासजी को गुरु बनाया और वे कहती हैं :

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ।
गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ॥

कुछ तथाकथित निगुरे लेखक शास्त्रों का मनमाना अर्थ लगाकर लोगों को यहाँ तक कह डालते हैं कि श्रीकृष्ण या शिवजी को ही गुरु मान लो। भगवान श्रीकृष्ण ने ऐसा नहीं कहा कि उनको ही गुरु बना लो। जीवित महापुरुष सांदीपनि मुनि को गुरु बनानेवाले श्रीकृष्ण गीता के चौथे अध्याय के ३४वें श्लोक में कहते हैं :

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

'उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म-तत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।'

भगवान की बात काटकर समाज को वैदिक गुरु-शिष्य परम्परा से विमुख करनेवाले निगुरे गुरुओं के उपदेशों से सावधान होना बहुत जरूरी है क्योंकि वे भारत की गुरु-शिष्य परम्परा को ही नकार देने का घोर अपराध करते हैं।

वैदिक साहित्य के उपनिषद्, गीता या अन्य किसी भी ग्रंथ में निगुरे रहने का उपदेश नहीं दिया गया। श्रुति कहती है :

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।

'उस जिज्ञासु को परमात्मा का वास्तविक

तत्त्वज्ञान प्राप्त करने के लिए हाथ में समिधा लेकर श्रद्धा और विनय भाव के सहित ऐसे सद्गुरु की शरण में जाना चाहिए जो वेदों के रहस्य को भलीभाँति जानते हों और परब्रह्म-परमात्मा में स्थित हों।' (मुण्डकोपनिषद् : १.२.१२)

ऐसी सनातन धर्म की दिव्य परम्परा को नष्ट करनेवाले निगुरे सम्प्रदाय के गुरुओं के उपदेशों से सावधान होना बहुत जरूरी है।

भगवान विट्ठल ने अपने भक्त नामदेव के लिए स्वयं गुरु न बनकर उन्हें ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष विसोबा खेचर से दीक्षा लेने को कहा था। यही नहीं स्वयं आद्यशक्ति माँ काली ने रामकृष्ण परमहंसजी को स्वयं दीक्षा न देकर उन्हें गुरु तोतापुरीजी की शरण में जाने को कहा था। और तो और, स्वयं भगवान श्रीराम व श्रीकृष्ण ने भी गुरु बनाये थे।

अतः भ्रांतियाँ फैलानेवाले नासमझ लेखकों को किसी धार्मिक पत्रिका में लेख छपवाने से पहले सोचना चाहिए। अपनी अल्पबुद्धि का परिचय नहीं देना चाहिए और स्वामी नित्यानंदजी जैसे समझदार महात्मा की बात माननी चाहिए। डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी जैसे तटस्थ न्यायविदों ने जो बात कही है कि ''बापू के खिलाफ किया गया केस पूरी तरह बोगस है।'' और यह भी कहा कि ''हिन्दू-विरोधी एवं राष्ट्र-विरोधी ताकतों के गहरे षड्यंत्रों को और हिन्दू संतों को बदनाम करने के उनके (विधर्मियों के) गुप्त हथकंडों को सीधे व भोले-भाले हिन्दू नहीं देख पा रहे हैं।'' इन बातों की कद्र करके अपनी हिन्दू संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए। एक ईसाई या मौलवी से कोई गलत काम हो जाता है, न्यायालय में सिद्ध भी हो जाता है तो भी दूसरा ईसाई या मौलवी उसको दोषी नहीं कहता क्योंकि अपने धर्म का है। हिन्दू संस्कृति ये नहीं कहती कि तुम दोषी को दोषी न कहो लेकिन इतना जरूर कहती है कि निर्दोष पर दोषारोपण करने के पहले सच्चाई जानने का प्रयास तो करो। हिन्दू संस्कृति के दुश्मन, हिन्दुत्व के लिए पूरा जीवन अर्पण करनेवाले किसी संत को षड्यंत्र करके फँसाने का प्रयास करते हैं और दूसरे कुछ हिन्दू, जो अपने को हिन्दुत्व के रक्षक मानते हैं, बिना सत्य की गहराई में गये उन संत पर टिप्पणी करने लगते हैं यह कितने खेद की बात है !

डॉ. डेविड फ्रॉली कहते हैं : ''भारत को अपने लक्ष्य तक पहुँचना है और वह लक्ष्य है अपनी आध्यात्मिक संस्कृति का पुनरुद्धार। इसमें न केवल भारत का अपितु मानवता का कल्याण निहित है। यह तभी सम्भव है जब भारत के बुद्धिजीवी आधुनिकता का मोह त्यागकर अपने धर्म और अध्यात्म की कटु आलोचना से विरत होंगे।'' (पृष्ठ १४, 'उत्तिष्ठ कौन्तेय')

अतः सावधान रहने की आवश्यकता है। धर्मशास्त्र के नाम पर अधर्म का उपदेश दे के संत-महापुरुषों को अपनी तुच्छ बुद्धि से तौलनेवाले एवं विधर्मियों के षड्यंत्रों को न समझकर संतों की निंदा करनेवाले ऐसे नासमझ लोगों से समाज को सावधान रहने की आवश्यकता है।

– वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर

पश्चिमी पद्धति से जन्मदिवस मनाना स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल

'भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद' द्वारा सूचित किये जाने के बाद सरकार द्वारा अब रोगाणुओं को फैलने से बचाने के लिए जन्मदिवस एवं विभिन्न उत्सवों के दौरान केक पर जलायी जानेवाली मोमबत्तियों को फूँककर बुझाने पर रोक लगाने के बारे में विचार-विमर्श किया जा रहा है।

पूज्य बापूजी अपने सत्संगों में पिछले कई वर्षों से इससे होनेवाली हानियों के बारे में बताते रहे हैं। आज वही बात सभीको स्वीकार करनी पड़ रही है। ऑस्ट्रेलिया की 'राष्ट्रीय चिकित्सा एवं अनुसंधान परिषद' ने भी कुछ समय पहले इस प्रकार रोक लगाने के कदम उठाये थे।

मीडिया का दोगलापन

– शिल्पा अग्रवाल
प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक

पत्रकारिता का काम है समाज में जो भी घटनाएँ हो रही हैं, उनको लोगों तक बिना पक्षपात के पहुँचाना। पर जब यह अपने किसी फायदे या मतलब की वजह से किसी एक ओर झुक जाती है और घटनाओं को अपने तरीके से बनाकर प्रस्तुत करती है तो वह समाज को गुमराह करती है। ऐसे में जन्म होता है पेड मीडिया का। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में यह बिकाऊ मीडिया नामक दैत्य ने नकारात्मक प्रभाव फैला रखा है।

साढ़े तीन महीने पहले भारत के संत आशारामजी बापू एक लड़की से छेड़छाड़ के झूठे आरोप में गिरफ्तार होते हैं। उनकी उम्र, स्वास्थ्य, आध्यात्मिक प्रतिष्ठा के बावजूद जेल में उन पर किसी भी तरह का कोई ध्यान नहीं दिया गया।

बिकाऊ मीडिया ने बापूजी को आरोपी सिद्ध करने की जितनी कोशिश की है, जिस हल्की भाषा का वे संत के प्रति उपयोग कर रहे हैं, यह हमारे देश के लोकतंत्र के लिए आश्चर्य ही नहीं, एक शर्मनाक चीज है। क्या इन पर कोई भी अंकुश रखनेवाला नहीं है ? इन्हें इतनी छूट क्यों है ?

बिकाऊ मीडिया ने खुद जज बनकर अपनी तरफ से उन्हें गुनहगार बता दिया। ऐसी अफवाह उड़ायी कि 'शिवा के पास बापूजी की अश्लील विडियो क्लिप की सीडी है।' आज तक कोई सीडी नहीं मिली। अब इनका कर्तव्य था कि ये वापस बोलते : 'ऐसी कोई सीडी हमें नहीं मिली।' पर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

बिकाऊ मीडिया ने कहा कि 'जो सच है, हम वह दिखाते हैं।' लेकिन भोलानंद के केस में मीडिया ने क्या किया सभी जानते हैं। भोलानंद ने कुछ चैनलों पर आकर कहा कि ''बापूजी के जम्मू आश्रम में बच्चों को दफनाया गया है।'' जब भोलानंद गिरफ्तार होता है तब क्यों खबर को दबाया गया ? लोगों ने चैनलों के ऑफिस में फोन लगाये तो उत्तर मिला कि 'हमें कोई अपडेट्स नहीं हैं।' कितना हास्यास्पद है ! जो लोग कहते थे कि 'आज तक सबसे आगे' उन लोगों के पास में इसकी कोई खबर नहीं है ! वही भोला जिसका इंटरव्यू लेने के लिए ये लोग उसके घर पहुँच गये थे, उसे स्टूडियो में बुलाया, उससे जो-जो बुलवाना था बुलवाया। वही भोला जब रिमांड में कबूल करता है कि 'बापूजी निर्दोष हैं। उसने उन पर जितने भी आरोप लगाये हैं वे बेबुनियाद हैं। जो भी मैंने बोला है वह मीडिया और अन्यों के प्रलोभन में आकर बोला है।' तब इसको कोई कवरेज नहीं दिया गया। निर्दोष संत को ७४ साल की उम्र में भी जिस तरीके से मीडिया द्वारा टॉर्चर किया जा रहा है, उसको नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कुछ समय पहले सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश पर किसी महिला वकील के साथ दुराचार का आरोप लगा तो महिला द्वारा लगाये गये आरोपों की सच्चाई जानने के लिए ३ जजों की एक कमेटी बना दी गयी। वाह ! क्या तरीका है ! फिर मामला आया बाबूलाल नागर, एक राजनेता का। इसमें पुख्ता सबूत मिलते हैं कि उसने रेप किया है लेकिन जिस मीडिया ने बापूजी जैसे संत पर इतना मीडिया ट्रायल किया है, रात-दिन उन्हें बदनाम करने की कोशिश की है उसने बाबूलाल नागर के केस को इतना क्यों नहीं दिखाया ? मीडिया ने क्यों इतना दोगलापन दिखाया ?

अभी सबसे बर्निंग व ताजा केस चल रहा है तहलका के एडीटर तरुण तेजपाल का। इसने एक महिला पत्रकार के साथ बलात्कार किया है।

ऑफिस के अंदर ही एक कमेटी का गठन किया गया और उस कमेटी ने बयान दिया कि यह अंदरूनी मामला है। आशाराम बापू का मैटर एक बोगस केस होते हुए इतना बड़ा है कि वह विश्वभर में फैल जाय और जब एक पत्रकार घेरे में आता है, उसने खुद कबूला है कि 'हाँ, मेरे से यह गलती हुई है' तो उसे कह देते हैं कि यह अंदरूनी मामला है ! उसकी सजा भी उसने खुद ही ढूँढ़ ली कि ''मैं ६ महीने तक एडीटर के रोल से खुद को फ्री करता हूँ।''

बड़े-बड़े एडीटर दावा करते हैं कि 'हम लोग महिलाओं की गरिमा के बहुत बड़े वकील हैं।' अब कहाँ गयी वह फिलोसॉफी ? अब कहाँ गया वह वायरस जो इन्होंने बापूजी के प्रति लोगों में मीडिया ट्रायल द्वारा फैलाया ? यही लोग बापू की निर्दोषता के अनेकों प्रमाण होते हुए भी उनके ऊपर इतना जोर-शोर से कह डालते हैं 'इन्हें सजा दी जाय' और आज जब इन्हींका केस आता है और दोष भी तय है तो इसको महत्त्व देना कोई जरूरी नहीं समझता ? इसमें पूरा रोल मीडिया का है। बिकाऊ मीडिया के इस दोगलेपन को समझना जरूरी है।

सद्गुरु के सिवा तारणहार कोई नहीं

भागवत में भगवान श्रीकृष्ण उद्धवजी से अपनी दुर्लभ सनातन भक्ति की प्राप्ति का सुगम मार्ग बताते हुए कहते हैं : ''हे प्रिय उद्धव ! मेरी जो सहज प्रकाश स्थिति है उसीको 'भागवत भक्ति' कहा गया है। इसीके प्रकाश से त्रिभुवन म उत्पत्ति, स्थिति और लय का भास होता है। मेरी जो अनेक अवतार मालिकाएँ व देवी-देवतागण हैं, वे इसी प्रकाश से उज्ज्वल रीति से प्रकाशित हैं। इस प्रकाश की जो प्राप्ति है वही मेरी सनातन भक्ति है यह जान लो।

हे जिज्ञासु उद्धव ! मेरी यह उत्तम भक्ति कैसे प्राप्त होगी ? यह पूछोगे तो मेरा यही उत्तर है कि भक्तिभाव से सत्संगति करने से मेरी भक्ति प्राप्त होती है।

मुख्य रूप से संतो की सेवा यही साधन भगवान को भाता है। जब वह प्राप्त होता है तो संत-वचन की ही तरह वह भी आत्मभाव और आत्मभक्ति प्रदान करता रहता है। जिसे सत्संगति के मेले में रहना अच्छा लगता है, जो साधु-वचनों का भूखा रहता है, साधु के मुख से निकले शब्द को जो अमान्य करना नहीं जानता, वही आत्मभक्ति का लाभार्थी भाग्यवान पुरुष है। साधु-वचनों पर उसकी अपार श्रद्धा है यह देखकर ही सद्गुरु उस पर कृपा करते हैं। चराचर में श्रेष्ठ गुरु ही साधु हैं।

सचमुच, गुरु के अलावा संसार से तारनेवाला कोई अन्य नहीं है। गुरुवचनों से भक्तों को आत्मभक्ति देनेवाला सर्वथा मैं ही हूँ। संसार में जो सद्गुरु हैं उनकी आज्ञा मैं शिरोधार्य करता हूँ। वे जिस पर कृपा करते हैं उसका मैं तत्काल उद्धार करता हूँ। सद्गुरु में मेरा स्वरूप है यह जानकर जो भजन करता है, उसे मैं कितना प्रेम करता हूँ यह कहना मेरे लिए कठिन है। उसका इहलोक और परलोक चलानेवाला मैं ही हूँ। उसके कारण मुझे अत्यंत आनंद प्राप्त होता है।

गुरु ने जो मार्ग दिखाया है उस पर चलने में उसे जरा भी परिश्रम नहीं करना पड़ता। उसे जो पद प्राप्त करना है वह पद ही मैं स्वयं उसके पास ले आता हूँ।'' **('श्री एकनाथी भागवत' से)**

वे धनभागी हैं जो ईश्वरप्राप्ति का उद्देश्य बनाकर आजीवन डटे रहते हैं। उन जैसे कोई बड़भागी नहीं जो सद्गुरु का दैवी कार्य करने में तत्पर हो जाते हैं। उनके दैवी कार्य में जो लग जाते हैं, ऐसे लोग सत्यस्वरूप को पाने के अधिकारी बन जाते हैं। - पूज्य बापूजी

अहमदाबाद आश्रम में अपने निर्दोष सद्गुरु की रिहाई के लिए प्रार्थना में तल्लीन साधक

पूज्य बापूजी की रिहाई के लिए देशभर में हुई रैलियों तथा हवन-यज्ञों की कुछ झलकियाँ

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

निर्दोष पूज्य बापूजी की रिहाई के लिए दिल्ली में पिछले चार महीनों से सतत चल रहा जन-सत्याग्रह

जन-सत्याग्रह व संत-सम्मेलनों में बड़ी संख्या में संत-समाज, सामाजिक संगठनों के प्रमुख एवं जागरूक जनता की उपस्थिति

जैसे स्वामी नित्यानंदजी, शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती और अन्य संतों पर लगाये आरोप निराधार निकले, उसी तरह हमारे बापू भी निर्दोष निकलेंगे।

- महामंडलेश्वर स्वामी कमलानंदजी

सबसे पहले हमें संकल्प लेना है कि 'जब तक बापूजी व नारायण साँईं आरोपों से मुक्त नहीं हो जाते हैं, तब तक हम तन-मन-धन से संघर्ष करते रहेंगे।' इसके लिए हमें दृढ़ निश्चय करना होगा। - श्री अवधेश कुमार, जाने-माने पत्रकार एवं लेखक

भक्त संगठित हैं, बापू के चरणों में श्रद्धा रखे हुए हैं और हिन्दू समाज भी साजिश से वाकिफ है। यही षड्यंत्र के विफल होने का पहला प्रमाण है।

- श्री चारुदत्त पिंगले, राष्ट्रीय मार्गदर्शक, हिन्दू जनजागृति समिति

बापूजी ने आश्रम बनाये, विद्यालय खोले, दवाखाने चलाये। इससे धर्मांतरण के कार्य में रोक लगी। इसीलिए बापूजी के ऊपर केस लगाया गया है और आश्रमों को नुकसान पहुँचाने के कुप्रयास किये जा रहे हैं। - श्री विजय भारद्वाज, प्रवक्ता, विश्व हिन्दू परिषद, पंजाब

अगर हिन्दुत्व पर २१वीं शताब्दी का सबसे बड़ा कोई हमला हुआ है तो वह संत आशारामजी बापू पर हुआ है। आनेवाले समय में पूज्य बापूजी निष्कलंक सूर्य के समान चमकते हुए फिर से सम्पूर्ण विश्व में भारत के सनातन धर्म का संदेश देंगे। - श्री अखिलेश तिवारी